शिक्षक-शिक्षा संवाद

6 मार्च 2021

'21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले मुख्यमंत्री

'सही दिशा मिले तो शिक्षक कर सकते हैं चमत्कार'

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और उपस्थित शिक्षाविद्।

भोपाल, 5 मार्च। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि शिक्षकों को यदि सही दिशा मिले तो वे शिक्षा व्यवस्था में चमत्कार कर सकते हैं। शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने हेतु मध्यप्रदेश सरकार ने गंभीर प्रयास प्रारंभ किये हैं। इस वर्ष हम कुल बजट का 9 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च कर रहे हैं। शिक्षा देना अकेले सरकार का काम नहीं है। यह समाज के सहयोग से संचालित व्यवस्था है। विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान जैसे संस्थान, जो शिक्षण की दिशा में बेहतर कार्य कर रहे हैं उन्हें सरकार पूरी मदद करेगी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति को जमीनी स्तर पर क्रियान्वित करने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ेगी।

मुख्यमंत्री श्री चौहान शुक्रवार को आर.सी.पी.व्ही.नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधन अकादमी, भोपाल में '21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे। इस संगोष्ठी का आयोजन स्कूल शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली एवं विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शिक्षा के क्षेत्र में आमूल–चूल परिवर्तन लाने की दिशा में बेहतर प्रयास बताते हुए कहा कि शिक्षा के तीन उद्देश्य हैं– ज्ञान देना, कौशल विकास करना तथा अच्छी नागरिकता के संस्कार देना। शिक्षक शिक्षा का अर्थ होता है ज्ञान को अगली पीढ़ी को देना। विद्यार्थी के पढ़ने के तरीके को विकसित करना, उसमें जिज्ञासा पैदा करना और जिज्ञासाओं का समाधान करना भी शिक्षा का एक उद्देश्य है। विद्यार्थी का स्वाभाविक विकास कैसे हो, इसकी चिंता शिक्षक को करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी शिक्षा व्यवस्था उद्देश्यपूर्ण, संस्कारयुक्त और स्वावलंबी होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में श्रेष्ठ मानव का निर्माण करने हेतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पूरी तरह लागू करने की प्रतिबद्धता ज्ञापित करते हुए मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि 15 से 20 किलोमीटर के दायरे में सीएम राइज स्कूल खोलने की महती योजना बनाई गई है। इन स्कूलों में आधुनिक भवन के साथ प्रयोगशाला, पुस्तकालय, खेल के मैदान आदि सभी उत्कृष्ट सुविधायें उपलब्ध रहेंगी। जहाँ विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। इन कार्यों में शिक्षकों की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को शिक्षित करना बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यद्यपि शिक्षा देना सरकार का ही काम नहीं है, अपितु यह समाज आधारित व्यवस्था है। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन करने के लिए मध्यप्रदेश सरकार विद्या भारती जैसे संस्थान के साथ मिलकर बेहतर कार्य करेगी। मुख्यमंत्री ने मध्यप्रद. श में पिछले दिनों शिक्षकों के पदनाम बदलकर गुरुजी, शिक्षाकर्मी करने पर गहरी वेदना व्यक्त करते हुए कहा कि हम शिक्षकों का सम्मान और गौरव लौटाने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील हैं।

मेरे गुरुदेव ने मुझे यहां तक पहुंचाया

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए अपने बचपन के संस्मरण भी सुनाए। उन्होंने कि वे जैत गांव के रहने वाले हैं और बचपन में शासकीय प्राथमिक शाला में पढ़े हैं। उनके प्रायमरी टीचर रतनचंद्र जैन थे। वे प्राथमिक विद्यालय में हम सभी विद्यार्थियों को पढ़ाते समय एक कार्यक्रम रोजाना किया करते थे। वे कहते थे कि प्रत्येक विद्यार्थी को रोजाना रामायण की पांच चौपाई पढ़ना है और उसका अर्थ भी समझाना है। हम लोग सब जब रामायण पढ़ते तो घर से घी का दीपक, फूल, प्रसाद आदि लाते थे। स्कूल का समय खत्म होता तो शाम 3.00 से 4.00 बजे रामायण पढ़ना शुरू करते थे। यह पढ़ते–पढ़ते बाल्यकाल में ही रामायण कंठस्थ हो गई और भाषण देने की कला भी विकसित हो गई। उन्होंने कहा कि गुरुदेव का ही चमत्कार है कि आज उन्होंने बचपन में जो प्रेरणा दी उसकी बदौलत वे आज इस मुकाम तक पहुंच सके हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति विजन डॉक्यूमेंट : प्रो. जगदीश कुमार

शुभारंभ समारोह में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. एम. जगदीश कुमार ने ऑनलाइन बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि शिक्षा विद्यार्थी केंद्रित होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक व्यापक विजन डॉक्यूमेंट है जो भारत को ज्ञान युक्त समाज, आत्मनिर्भर और विश्व गुरु बनाने के उद्देश्य से तैयार की गई है। इसमें शिक्षा में होने वाले सुधारों पर व्यापक विचार विमर्श हुआ है और शिक्षक शिक्षा इसका एक महत्वपूर्ण भाग है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में शिक्षा समवर्ती सूची में है और केंद्र सरकार और राज्य दोनों पर इसकी जिम्मेदारी है।

उन्होंने आधुनिक विज्ञान के उदाहरणों को स्पष्ट करते हुए कहा कि 'लर्निंग बाय डूइंग' सीखने का एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, लेकिन आज हमारी शिक्षा सिर्फ लेक्चर सुनने पर केंद्रित है। आदि गुरु शंकराचार्य ने सीखने की चार स्थितियां बताई हैं– पठन, मनन, चिंतन और संकेतन। आज आधुनिक विज्ञान इसी प्रक्रिया में सीखने को सबसे अधिक प्रभावी मानता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यार्थियों को उद्यमी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं। इसके अलावा शिक्षक शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कई तरीके के प्रयोग शामिल किए गए हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षक नवाचारों और सृजनात्मक तरीके से कार्य करें तो वह विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। उन्होंने आह्वान किया कि शिक्षकों को विभिन्न संकायों के बारे में जानना चाहिए और उनको आपस में जोड़कर अध्यापन करना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि आजादी के बाद भारत की शिक्षा व्यवस्था को लेकर कई कमीशन बने, नीतियां बनी, परन्तु उनका क्रियान्वयन ठीक से नहीं हो पाया। इस शिक्षा व्यवस्था को बदलने हेतु देश भर के शिक्षाविदों ने गंभीर चिंतन किया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की गई। इस शिक्षा नीति में शिक्षा की संरचना, पाठ्यक्रम, शिक्षक और शिक्षा प्रणाली के साथ–साथ शिक्षक शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। उन्होंने कहा कि शिक्षक 'बाय चांस नहीं, बाय च्वाइस' बनना चाहिए। ऐसा होने पर वे मन से पढ़ायेंगे और आदर्श विद्यार्थियों का निर्माण करेंगे। उन्होंने कहा कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान विचार–विमर्श में जो तथ्य निकलकर आयेंगे उन्हें अमल में लाया जाएगा। **शेष पेज 2 पर देखें**

प्रथम पेज का शेष

सर्वसुविधा युक्त स्कूल बनाने का प्रयास : इंदर सिंह परमार

आयोजन समिति के अध्यक्ष और स्कूल शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि आजादी के बाद शिक्षा व्यवस्था के सुधार के लिए जो काम होना चाहिए थे, वे नहीं हो पाए। शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन के उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाई गई है, जिसमें शिक्षक शिक्षा एक महत्वपूर्ण आयाम है। इतिहास में जितने भी सफल व्यक्ति हुए हैं, उनके पीछे हमेशा गुरु, शिक्षक रहा है। इस देश में नालंदा और तक्षशिला जैसे सर्वोच्च विश्वविद्यालय रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम विद्यार्थियों को भारत केंद्रित, गुणवत्तापूर्ण, ज्ञान आधारित शिक्षा प्रदान करें। भारत का ज्ञान अनंत है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में हम सर्वसुविधा युक्त स्कूल बनाने के लिए प्रयासरत हैं। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी से निकलने वाली सिफारिशों को भी हम यहां लागू करेंगे।

इससे पूर्व प्रवेश एवं शुल्क विनियामक आयोग के अध्यक्ष प्रो. रवीन्द्र कान्हारे ने अतिथियों का परिचय दिया। सुश्री खुशबू पाण्डेय ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मंजूश्री देशपांडे ने किया। आभार प्रदर्शन आयोजन समिति के संयोजक डॉ. शशि रंजन अकेला ने किया। समारोह में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, स्कूल शिक्षा विभाग एवं राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के अधिकारी तथा विद्या भारती के पदाधिकारी उपस्थित थे। दो दिन तक चलने वाली इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में 250 से अधिक शिक्षाविद सहभागिता कर रहे हैं। संगोष्ठी का समापन 6 मार्च को होगा।

लैंग्वेज, लॉजिक और लाइफ स्किल सिखाना है, शिक्षा का मूल उद्देश्य

कक्षा में सभी विद्यार्थियों को पढ़ाए जा रहे सभी विषय समझ में आयें, इसके लिए हमें शिक्षण की तकनीकी को ही बदलना होगा। हैदराबाद का वंदे मातरम फाउंडेशन इस दिशा में प्रयासरत है और अपने शिक्षण मॉडल के माध्यम से संस्थान ने विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता में अभूतपूर्व परिवर्तन किया है। फाउंडेशन के प्रमुख माधव रेड्डी यदमा ने बताया कि आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और जम्मू और कश्मीर में पचास हजार विद्यार्थियों पर हुए शोध से यह निष्कर्ष सामने आया कि वर्तमान शिक्षण पद्धति से मात्र 15 प्रतिशत विद्यार्थी ही विषय को समझ पाते हैं। कक्षा में पढ़ाई जा रहे पाठ्यक्रम के बारे में पूर्ण जानकारी नहीं मिल पाती है। वह समझ भी नहीं पाते हैं। यह शिक्षण व्यवस्था मात्र 15 प्रतिशत विद्यार्थियों के लिए काम कर रही है। डिग्री पूर्ण करने के बाद भी विद्यार्थी को व्यक्तित्व विकास और भाषा सीखने जैसी कक्षाओं में दोबारा जाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि इसके लिए 'वन टीचर–वन स्टूडेंट' मॉडल होना चाहिए, लेकिन यह व्यवहारिक रूप से संभव नहीं है। इसलिए 'लिटिल लीडर–लिटिल टीचर' के कांसेप्ट को उन्होंने विकसित किया और इस पर कार्य कर रहे हैं। इसमें एक विद्यार्थी अपने सीखे हुए विषय को दूसरे विद्यार्थी को सिखाता है।

उन्होंने बताया कि 3 एल– लैंग्वेज, लॉजिक, और लाइफ स्किल सिखाना शिक्षा का मूल आधार है और इन्हीं से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। उन्होंने अपने शोध के माध्यम से इस तरीके के मॉडल विकसित किए हैं, जिसमें 102 घंटे सुनने पर विद्यार्थी की किसी भी भाषा के बारे में समझ विकसित हो जाती है 3000 घंटे सुनने पर उस भाषा में उसका पूर्ण नियंत्रण भी आ जाता है। चित्रों के माध्यम से याद रखना बहुत आसान होता है। अभी जो वर्तमान शिक्षा पद्धति है वह साक्ष्य के लिए नकल को प्रोत्साहित कर रही है। उन्होंने कहा कि लॉजिक के लिए हम पियर लर्निंग को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके लिए उन्होंने वर्कशीट बनाई है। उनके 'न्यू एज गुरुकुल' में विद्यार्थी शिक्षा के कई हिस्सों को 'लर्निंग बाय डूइंग' से समझते हैं और उनको प्रयोग में लाते हैं। हैदराबाद के पास कल्वाकूर्ति में यह गुरुकुल संचालित है, जिसमें छठी कक्षा से ही व्यवसायिक शिक्षा भी दी जा रही है। उनके इस मॉडल को राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी शामिल किया गया है।

गणित को सरल बनाने के लिए बना दिया संग्रहालय

आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में 3 दशकों से अधिक समय तक विद्या भारती के विद्यालय में शिक्षक रहे श्री पी. सत्यनारायण शर्मा ने गणित विषय को सरल बनाने के लिए 100 से अधिक मॉडल विकसित किए और उनका एक संग्रहालय बना दिया। जटिलता के कारण अधिकांश विद्यार्थी गणित को हमेशा कठिन विषय मानते हैं। रेखा, डायग्राम, अंकों के प्रयोग, फार्मूले को आसानी से समझ नहीं पाते हैं। उन्होंने प्रयास किया कि गणित के शिक्षण को अधिक रोचक बनाएं और इसे मनोरंजन के साथ जोडें। उन्होंनें कलाकृतियों के माध्यम से मॉडल विकसित किए और गणित के विषय को समझाने के लिए उनका उपयोग किया, जिसमें वे प्लेइंग कार्ड्स का भी उपयोग करते हैं। गणित विषय और शिक्षण को लेकर उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी हैं। उनके मॉडल को कई जगह प्रदर्शनियों में भी दर्शाया गया है। उनके प्रयोग से इतिहास में स्वदेशी गणितज्ञों की जानकारी भी वे विद्यार्थियों को देते हैं। इसके अलावा वे देश भर में घूम–घूम कर शिक्षकों और विद्यार्थियों को प्रशिक्षण भी दे रहे हैं। उनके मॉडलों से त्रिकोणमिति, बीजगणित, वैदिक गणित के कॉन्सेप्ट को बहुत आसानी से समझाया जा सकता है। विजयवाड़ा में भी उन्होंने एक 'मैथमेटिक्स म्यूज़ियम' बनाया है, जिसमें 100 से अधिक मॉडल प्रदर्शित हैं।

अनुपयोगी सामानों से विज्ञान उपकरणों का निर्माण

घर में बहुत से अनुपयोगी सामान होते हैं जिन्हें हम फेंक देते हैं या फिर वह अन्यत्र स्थानों पर पड़े रहते हैं। ऐसे अनुपयोगी सामानों के द्वारा विज्ञान के उपकरणों का निर्माण किया जा सकता है। यह विज्ञानात्मक प्रयोग विद्या भारती के वरिष्ठ प्राध्यापक देवकीनंदन चौरसिया द्वारा तैयार किया गया। उन्होंने इस मॉडल का प्रदर्शन राष्ट्रीय संगोष्ठी स्थल पर किया है। चर्चा के दौरान चौरसिया ने बताया कि आज विज्ञान ने मनुष्य को अपने ऊपर इतना आश्रित कर लिया है कि इसके बिना एक कदम भी बढ़ाए जाना संभव नहीं है। व्यक्तिगत रूप से दिन प्रतिदिन के जीवन कार्य विज्ञान की मदद से ही होते हैं।

विज्ञान वह व्यवस्थित ज्ञान या विद्या है जो विचार, अवलोकन, अध्ययन और प्रयोगों से मिली है। अभी हमारी शिक्षा पद्धति में केवल विज्ञान को विषय समझ कर पढ़ाया जाता है। यहां के शिक्षक केवल विज्ञान को अंको के लिए पढ़ाते हैं अभी हम विज्ञान का एक भाग पढ़ाते हैं यानी हम केवल अध्ययन कराते हैं ना तो हम विज्ञान में अवलोकन कराते हैं और ना ही प्रयोग। हम विज्ञान का अध्ययन तो करा पा रहे हैं पर क्या हम छात्रों को विज्ञान का व्यवहारिक ज्ञान भी दे पा रहे हैं ? ऐसा कहा जाता है कि विज्ञान के ज्ञान भंडार की बजाय वैज्ञानिक विधि (प्रयोग विधि, अवलोकन, प्रेक्षण) विज्ञान की असली कसौटी है। अब हमारे सामने प्रश्न आता है, कि प्रयोग कराने के लिए प्रयोगशालाओं का निर्माण कराया जाये। पर क्या वास्तव में प्रयोग आधारित विज्ञान पढ़ाने के लिए हमें बड़ी बड़ी प्रयोगशालाओं की आवश्यकता है ''नहीं ऐसा नही है। विज्ञान के प्रयोग तो हमारे आस–पास बिखरे पड़े हैं बस अब हमें जरूरत है तो उन्हें पहचानने की – रास्ते में विज्ञान है, बस्ते में विज्ञान है, पेंसिल,कॉपी घर, चौबारे में विज्ञान है हमारे चारों ओर हर जगह विज्ञान विद्यमान है। हम कदम–कदम पर विज्ञान का सामना करते हैं। विद्यार्थियों को हमें उन सामान्य प्रयोगों पर आधारित सिद्धांतों को ही उपयोग में लाकर वैज्ञानिक परिदृश्य में ढालना होगा।

उन्होंने कहा कि हमारे घर में उपयोग आने वाली सामान्य सी सामग्री जो किसी कबाड़ से कम नहीं उन सामानों का उपयोग हम विज्ञान के सरल प्रयोग में कर सकते हैं। हम बड़ी आसानी से कागज, पानी, धागा, प्लास्टिक व लकड़ी के गट्टे चुंबक, लोहे की रॉड, पेड़ की पत्तियां, रंग, कांच के गिलास, खिलौनों में लगने वाली विद्युत मोटर इत्यादि अनुपयोगी सामानों से विज्ञान के बहुत उपयोगी तथा प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित विज्ञानात्मक प्रयोग या सरल प्रदर्श का निर्माण कर सकते हैं। इन विज्ञानात्मक प्रयोगों का खर्च किसी प्रयोगशाला के उपकरण से काफी कम होगा और साथ ही साथ विद्यार्थियों को विज्ञान के सिद्धांत बड़ी ही सरलता से खेल–खेल में सिखाया जा सकेगा। इन प्रयोगों को विद्यार्थी स्वयं भी घर पर बना सकेंगे। यह प्रयोग हमारी शिक्षण पद्धति को निखारने का कार्य करेंगे और हम विज्ञान को विषय न मानकर विद्यार्थियों को रुचिकर शिक्षण प्रदान कर सकेंगे। इन अनुपयोगी सामानों से जब विद्यार्थी प्रयोग या प्रदर्श तैयार करेंगे तो विद्यार्थियों में भी एक वैज्ञानिक दष्टिकोण का विकास होगा जो आगे चलकर हमारे देश की उन्नति में सहायक होगा। यह प्रयोग दिखने में बहुत सरल होंगे पर जब विद्यार्थी इनमें छिपे विज्ञान का अध्ययन करेंगे तो वास्तव में विद्यार्थी बहुत ही आनंद के साथ शिक्षण करेंगे। जिससे विद्यार्थियों के मस्तिष्क में एक जिज्ञासु प्रवृत्ति एंव वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होगा।

नवाचार के लाभ

- छात्रों में वैज्ञानिक अभिवृति, जिज्ञासु वृति का विकास होगा।
- छात्र प्राप्त ज्ञान को प्रयोग द्वारा नवीन परिस्थियों में प्रयोग कर सकते है।
- प्रयोगो के द्वारा प्राप्त परिणामो को दैनिक जीवन में प्रयोग करना।
- समस्याओं की पहचान एंव उनके निदान करने की क्षमता का विकास होगा।
- प्रयोगो द्वारा प्राप्त परिणामो का विश्लेषण करना सीख सकेंगे।

नवाचारों के माध्यम से किया 10,000 से अधिक बच्चों का पुनर्वास

बेंगलुरु में गोपीनाथ स्पर्श ट्रस्ट ने नवाचारों की मदद से पिछले 10 वर्षों में दस हजार से अधिक उन बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ा जो शिक्षा छोड़ चुके थे या कभी स्कूल ही नहीं गए थे। यह कार्य उन्होंने बिना किसी सरकारी मदद से किया। ट्रस्ट के प्रमुख गोपीनाथ रामाप्पा ने बताया कि शिक्षा और शिक्षक को तैयार करने में उन्होंने नवाचारों की एक श्रंखला शुरू की और कॉरपोरेट और समाज के सहयोग से आंगनवाड़ी, मॉडल स्कूल, चाइल्ड हेल्पलाइन, साइंस पार्क जैसी संस्थाएं विकसित की। इन संस्थाओं को आगे सुचारू रूप से चलाने के लिए उन्होंने अलग–अलग तरीके के 'सस्टेनेबल मॉडल' विकसित किए। आज ट्रस्ट के अंतर्गत 170 से अधिक आंगनवाड़ी बेंगलुरु और आसपास के जिलों में चल रही है। ट्रस्ट में लगभग 120 लोग कार्यरत हैं। स्कूलों में पूर्व विद्यार्थियों की मदद से कई प्रकार की गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। बेंगलुरु और आसपास के 5 जिलों में 10 मॉडल स्कूल भी ट्रस्ट ने स्थापित किए हैं। यह मूल रूप से उन बच्चों पर कार्य कर रहा है जो किसी कारण पढ़ाई छोड़ चुके हैं या कभी स्कूल ही नहीं गए। ऐसे बच्चों को ढूंढने के लिए वे दो चाइल्ड हेल्पलाइन भी संचालित कर रहे हैं। दसवीं से ऊपर की कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए ट्रस्ट कौशल विकास केंद्र भी चला रहा है। जहां प्रतिवर्ष 100 से अधिक युवा कौशल प्राप्त कर विभिन्न तरीके के व्यवसायों में प्रवेश कर रहे हैं। इसके अलावा निर्माणाधीन भवनों की साइट पर मोबाइल झूलाघर भी संचालित किए जा रहे हैं और साथ में छोटे शिशुओं की माताओं के लिए 'अवनि' नामक कार्यक्रम भी संचालित किया जा रहा है। बेंगलुरु में ट्रस्ट के शेल्टर होम में 600 विद्यार्थी आज रह कर अपनी पढ़ाई कर रहे हैं।

दिव्यांग बच्चों के प्रति हमें संवेदनशील बनना होगा : प्रो. पाण्डेय

बाल अधिकार एवं विशेष शिक्षा पर तकनीकी सत्र

21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन स्वर्ण जयंती सभागार में 'बाल अधिकार एवं विशेष शिक्षा' पर तकनीकी सत्र आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता प्रो. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, डीन स्कूल ऑफ एजुकेशन, आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी, पटना द्वारा की गई। तकनीकी सत्र के वक्ता श्री प्रियंक कानूनगो, चेयरपर्सन, नेशनल कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स, नई दिल्ली, श्री कमलकांत पाण्डेय, नेशनल सेक्रेटरी सक्षम, नईदिल्ली, प्रो. सुनील गुप्ता, कुलपति, आरजीपीवी, भोपाल थे। कार्यक्रम का संचालन श्री आशीष पुराणिक, उपकुलपति, बीएमसीसी कॉलेज ने किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में श्री प्रियंक कानूनगो ने भारत में बाल अधिकार के कानूनी पहलू को विस्तार से रेखांकित करते हुए कहा कि यह विदेशों से आयातित न होकर भारतीय कानून में पहले से व्यवस्था रही है कि बच्चों को उनके अधिकार दिये जायें। इसी तरह से शिक्षा पद्धति में मैकाले का विषय भी चिंतनीय है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति इन सब सवालों का जवाब है। हमें उनके प्रत्येक यूनिट को पाठ्यक्रम में क्रियान्वित करना चाहिए। समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री कमलकांत पाण्डेय, ने विशेष रूप से विकलांग बच्चों का विषय रखा। उनका कहना था कि विकलांग बच्चों के लिए विशेष शिक्षक, विशेष वातावरण और विशेष विद्यालयों की आवश्यकता है। समारोह में डॉ. सुनील गुप्ता ने कहा कि वर्तमान में इंजीनियरिंग शिक्षा के मामले में वोकेशनल और नॉन वोकेशनल शिक्षा को लेकर विरोधाभास है। हम आईटीआई को वोकेशनल एजुकेशन की श्रेणी में मानते हैं। जबकि इंजीनियरिंग को हम नॉन वोकेशनल समझते हैं। इस विसंगति के कारण विद्यार्थी प्रशिक्षित नहीं हो पा रहे हैं।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रो. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी ने कहा कि उपनिषदों में भारत की ज्ञान परम्परा का उल्लेख है। हमारा ज्ञान विद्यार्थियों तक कैसे पहुंचे यह शिक्षक शिक्षा का मूल आधार है। उन्होंने नचिकेता की कहानी सुनाते हुए माता–पिता के आदर और सम्मान का उल्लेख किया। प्रो. त्रिपाठी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने की बात को प्रासंगिक बताते हुए कहा कि इससे भारतीय संस्कृति पल्लवित होगी और भाषाओं का विकास होगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान माहौल में जिन विश्वविद्यालयों से डिग्री लेकर विद्यार्थी जा रहे हैं वे विश्वविद्यालय अपने ही विद्यार्थी को नौकरी नहीं दे रहे हैं।

चिकित्सा, अभियांत्रिकी शिक्षा में भी लाया जाएगा बदलाव – डॉ. मोहन यादव

सत्र में उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव भी पहुंचे। सत्र अध्यक्ष प्रो.सुधाकर वी ने पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर उनका स्वागत किया। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रशंसा करते हुए उच्च शिक्षा मंत्री ने कहा कि मध्यप्रदेश में भी जल्द इसे लागू करेंगे। उन्होंने भारतीय परम्परा की बात करते हुए चिकित्सा शिक्षा, अभियांत्रिकी शिक्षा में भी बदलाव लाने की बात कही। उन्होंने कहा कि भोपाल में राजा भोज ने शिक्षा का आरंभ किया था। उन्होंने शिक्षा में बदलाव लाए जाने पर विशेष बल दिया।

वैकल्पिक मूल्यांकन प्रक्रिया व तकनीक आधारित एसेसमेंट की जरूरत : रफी मोहम्मद

राष्ट्रीय संगोष्ठी में दूसरे समांतर सत्र में शिक्षण पद्धति, मूल्यांकन एवं सूचना–संचार प्रौद्योगिकी विषय पर चर्चा हुई। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. पी.एन. सिंह, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी ने की जबकि मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. पंकज अरोरा, यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली एवं डॉ. रफी मोहम्मद, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी हैदराबाद ने विचार रखे।

मुख्य वक्ता प्रो. पंकज अरोरा ने बताया कि हम विविधता पूर्ण एक बड़ा समाज हैं, मतभेदों के साथ कैसे एकजुट रहा जाए यह आज की आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी की भूमिका आज बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा पद्धति में बदलाव की बात गांधी जी की बुनियादी शिक्षा अभी भी प्रासंगिक है। देश में स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, महर्षि अरविंद एवं टैगोर ने जो शिक्षण पद्धतियां हमें दी हैं वह आज भी सार्थक और व्यवहारिक हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इनकी मूल भावना का समावेश है। आज 360 डिग्री एसेसमेंट रिपोर्ट कार्ड के माध्यम से इंटेलीजेंट कोशेंट एसेसमेंट और मोशनल कोशेंट एसेसमेंट लो. कप्रिय हैं। डॉ. पंकज ने चिंता व्यक्त की कि देश में अनियंत्रित बी–एड कॉलेज की बाढ़ से गुणवत्ताहीन शिक्षा शिक्षकों की भीड़ निकल रही है जो चिंता का विषय है।

सत्र के दूसरे वक्ता डॉ. रफी मोहम्मद ने कहा कि विद्यार्थी साल भर जो पढ़ते हैं वह साल के आखिर में एक बार उसे परीक्षा में लिख देते हैं, यह गलत और नुकसान देने वाली प्रवृत्ति है, जिसे दूर करना जरूरी है। स्कूल शिक्षा में वैकल्पिक मूल्यांकन प्रक्रिया और तकनीक आधारित एसेसमेंट की जरूरत है। शिक्षक की क्षमता बढ़ाने के लिए हमें नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को व्यवहारिक रूप में धरातल पर उतारना होगा

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. पी.एन. सिंह ने सभी वक्ताओं के सार को रखते हुए शिक्षा शिक्षकों से संवाद किया और समस्याओं का व्यावहारिक समाधान निकालने में सहयोग का आव्हान किया।

पद से नहीं, स्वयं की पहचान बनाइए – प्रो. राय

फाउंडेशन फॉर भारतीय फिलोसॉफिकल थॉट कल्चर, साईकोलॉजिकल एंड सोशोलॉजिकल विषय पर स्वर्ण जंयती सभागार में आयोजित सत्र में संस्कृत प्रमोशन फाउंडेशन के डायरेक्टर प्रो. चांदकिरण सलूजा ने वक्ता के रुप में बोलते हुए कहा कि शिक्षक का अर्थ होता है, सीखने वाला। शिक्षक को पहले खुद सीखना चाहिए फिर अपने विद्यार्थियों को सिखाना चाहिए। उन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा, शिक्षा, संस्कृति की प्रशंसा की। प्रो. सलूजा ने कहा कि संसार में ज्ञान के समान कुछ भी नहीं है। इसलिए ज्ञान से कभी जी नहीं चुराना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों से कहा कि उन्हें चाहिए कि वे अध्यापकों एवं अभिभावकों का निरीक्षण करें। पहले बच्चों को समझें फिर उसके मन को समझे। जो ऐसा कर पाता है वही सहीं मायने में शिक्षक है। शिक्षक को अनुशासित रहने की सलाह देते हुए कहा कि शिक्षकों को समय पर आना चाहिए, यदि वे समय पर आएंगे तो विद्यार्थी भी इसका अनुसरण करेंगे। आईआईएम इंदौर के प्रो. हिमांशु राय ने अपने तरीके से भारतीय फिलोसॉफी को समझाया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र और देश अलग–अलग है। प्रो. राय ने कहा कि राष्ट्र की बात करते ही उसमें संस्कृति भी जुड़ जाता है। उन्होंने शिक्षा और धर्म पर भी अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने गीता और उसके कर्म के मार्ग को बड़े ही रोचक अंदाज में उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया। प्रो. राय ने कहा कि अपने आपको पहचानों कि तुम कौन हो? उन्होंने कहा कि अपने पद से अपनी पहचान मत बनाइये, अपनी खुद की पहचान बनाइए। भारत को विश्व का मार्गदर्शक बताते हुए उन्होंने युवाओं से देश को और आगे ले जाने की बात कही। उन्होंने विद्या एवं अविद्या, सहीं और गलत, अच्छे और बुरे के बीच के भेद को भी विभिन्न उदाहरण के साथ बखूबी समझाया।

संस्कृति ज्ञान के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से समझाया

सत्र की अध्यक्षता करते हुए स्कूल ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज एजुकेशन हैदराबाद के डीन प्रो. सुधाकर वी. ने ज्ञान के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से समझाया। उन्होंने शिक्षा और ज्ञान पर प्रकाश डालते हुए इसके महत्व को बहुत अच्छे ढंग से समझाया। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को यह सोचना चाहिए कि वे देश के लिए क्या योगदान दे सकते हैं ? समाज को लेकर हमारा क्या विजन है ? शिक्षा के क्षेत्र में क्या–क्या अच्छा कर सकते हैं ? उन्होंने ज्ञान के तीन स्तरों के बारे में बताया। उन्होंने शिक्षा,समाज और शिक्षकों के योगदान पर अपने विचार व्यक्त किए।

विवि अपने पाठ्यक्रमों का लर्निंग आउटकम तय करें – प्रो. तिवारी

21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन के अंतिम विशेष तकनीकी सत्र को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पंजाब के कुलपति प्रो. आर.पी.तिवारी ने कहा कि सभी विश्वविद्यालयों को उनके यहां संचालित पाठ्यक्रमों का लर्निंग आउटकम तय करना चाहिए। इससे उनके पाठ्यक्रम की उपयोगिता तथा छात्रों के सीखने की क्षमता का पता चल सकेगा। इस तकनीकी सत्र में शिक्षा पर प्रयोगात्मक रूप से कार्य करने वाले डॉ. गोपीनाथ, डॉ. सत्यनारायण शर्मा, सुश्री भावना कश्यप, तरुण चौबीसा एवं सरस्वती ग्रामोदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गोविंद नगर के शिक्षक राहुल ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपनी बात रखी। इन प्रस्तुतियों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारत की दिशा, भारतीय संस्कृति, गणित के मॉडल, टीचिंग लर्निंग मॉडल एवं शिक्षकों की भूमिका को दर्शाया गया। बैंगलुरू से पधारीं भावना कश्यप ने बताया कि उन्होंने एम.बी.ए. करने के बाद

दिशा भारत नाम का एन.जी.ओ. बनाया और इसके माध्यम से ऑनलाइन प्रोग्राम संचालित किए, जिनके द्वारा युवाओं को राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं भारतीय संस्कृति पर केन्द्रित कार्यक्रमों से जोड़ा गया। गोविंद नगर के शिक्षक राहुल ने गणित की प्रयोगशाला बनाकर अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। इस प्रयोगशाला में बच्चों में गणित के प्रति रुचि विकसित करने एवं उन्हें अध्ययनशील बनाने हेतु आपका विद्यालय आपके द्वार जैसे अभियान शुरू किए गए।

डॉ. गोपीनाथ ने बताया कि वे पिछले एक दशक से स्पर्श नाम की संस्था का संचालन कर रहे हैं। जब यह संस्था शुरू की गई थी तब उनके पास तीन हजार रुपये थे और समाज के सहयोग से उन्होंने धीरे–धीरे संस्था का विकास किया। आज लगभग 150 से ज्यादा विद्यार्थियों को छात्रावास, स्कूल एवं अन्य सुविधाएं एक ही परिसर में उपलब्ध करा रहे हैं। यह करते हुए उन्हें काफी अच्छा महसूस हो रहा है।

स्वर्ण जयंती सभागार में संध्याकालीन रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति देते संस्कृत ध्रुवा बैंड के साथी कलाकार।

शिक्षकों को पढ़ाना एक चुनौती : प्रो. अरोड़ा

जो समाज अपने बच्चों को सिखाता नहीं, बल्कि उनसे कुछ सीखता है, वही अपने अभीष्ट को प्राप्त करता है। राष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्घाटन सत्र के बाद पहला प्लेनरी सत्र नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के लिए नवोन्मेष और रचनात्मक आयामों पर केंद्रित रहा। स्कूली शिक्षा के नए पाठ्यक्रम और शिक्षा पद्धति संरचना विषय पर केंद्रित इस सत्र में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय अनुभव और शोध करने वाले विशिष्ट विद्वानों ने अपने विचारों और प्रस्तावों को सभी के सामने रखा।

सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. पंचनाथन, कुलपति तमिलनाडु शिक्षक शिक्षा विश्वविद्यालय ने की। वक्ताओं के रूप में प्रो. रंजना अरोरा, प्रमुख, आरएमएसए सेल, एनसीईआरटी, श्री रामकृष्ण राव, अखिल भारतीय अध्यक्ष, विद्या भारती श्री दिव्यांशु दवे, मार्गदर्शक समग्र विकास प्रकल्प ने अपने विचार और प्रस्ताव रखे। सत्र का संचालन यूजीसी की सदस्य डॉ. किरण हजारिका ने किया।

प्रो. रंजना अरोड़ा ने कहा कि स्कूल शिक्षा में सबसे बड़ी चुनौती यह है कि शिक्षकों को पढ़ना कैसे सिखाया जाए यानी आज के दौर में शिक्षा के लिए शिक्षक को कैसे प्रशिक्षित किया जाए। श्री रामकृष्ण राव ने कहा कि विद्या भारती का शिक्षक शिक्षा पर दृष्टिकोण और मॉडल 68 वर्षों के व्यवहारिक और अनुभवजन्य तप का प्रतिफल है। इसलिए विद्या भारती के शिक्षक शिक्षा पर आधारित इस मॉडल को देशभर में लागू करना शिक्षा व्यवस्था के लिए सकारात्मक होगा।

देश में अर्ली चाइल्डहुड पर 'शिशु वाटिका' के माध्यम उल्लेखनीय और सफलतापूर्वक काम करने वाले प्रो. दिव्यांशु दवे ने कहा कि शिशु अवस्था मानवता का ही बीज है और विश्व शांति की चाबी गर्भ में ही बनती है। शिशु अपने आप सीखता है, यही उसका विकास है।

शिक्षा के मॉडलों ने प्रतिभागियों का मन मोहा

शिक्षा में प्रयोगात्मक क्रियाकलापों पर केंद्रित तीसरे समानांतर सत्र में देश के विभिन्न क्षेत्रों से ऐसे लोगों ने अपने मॉडल रखे जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोगों को हथियार बनाकर नवोन्मेष किया। ऐसे लोगों ने अपनी प्रस्तुतियां दी। इस सत्र की अध्यक्षता विद्या भारती के अखिल भारतीय सचिव श्री शिवकुमार जी ने की।

राजस्थान से आए शिक्षक श्री संदीप जोशी ने स्कूल शिक्षण में अपने प्रयोगों से लोगों का ध्यान खींचा। श्री जोशी ने बताया कि बच्चों पर बस्ते के बोझ की समस्या को उन्होंने सभी किताबों को हिस्सों में बांट कर अलग–अलग छोटी–छोटी पुस्तिकाएं बनवाकर दूर कर दिया। इस पहल को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में एक स्कूल में चलाया गया। आंध्र प्रदेश से आए श्री माधव रेड्डी ने कहा कि अभी तक का फैलियर शिक्षक का नहीं, सिस्टम का है। उन्होंने बताया कि अलग–अलग ग्रेड और स्टेटस के बच्चों को एक साथ एक ही शिक्षक द्वारा पढ़ाए जाने की प्रवृत्ति अनुचित है। इसके लिए 'वन टीचर फॉर वन स्टूडेंट्स' का मॉडल होना चाहिए। उनके मॉडल में बच्चों को पढ़ाई के साथ लाइफ स्किल जैसे खाना बनाना, बागवानी करना, गौ पालन आदि भी सिखाया जा रहा है।

कर्नाटक से आए श्री पंकज जैन ने बताया कि बच्चों में क्यूरियोसिटी क्रिएट करना आवश्यक है। बच्चों की जिज्ञासा का समाधान न करके उन्हें खुद एक्टिविटी के माध्यम से खुद का परीक्षण करने दीजिए। हरदा से आए श्री राजेश वर्मा ने बताया कि उन्होंने खिलौनों के माध्यम से स्कूली विद्यार्थियों को विज्ञान और सामाजिक विज्ञान समझाने का अभिनव प्रयास किया है। उनका कहना है कि खिलौनों के माध्यम से बच्चों में पहले जिज्ञासा पैदा की जाती है और उसके बाद इन खिलौनों के माध्यम से ही उन्हें विज्ञान और लाइफ स्किल के संबंध में जरूरी चीजें सीखने और समझने में मदद मिलती है, इससे बच्चों की रचनात्मकता बढ़ती है।

संघ के सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले ने किया प्रदर्शनी का उद्घाटन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले ने संगोष्ठी स्थल पर लगाई गई प्रदर्शनी 'भारत केन्द्रित शिक्षा क्रियान्वयन में शिक्षा भारती का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन किया। इस मौके पर विद्या भारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री डी. रामकृष्ण राव एवं संगठन मंत्री जे.एम. काशीपति सहित कई शिक्षाविद उपस्थित थे। इस प्रदर्शनी में शिक्षा नीति के बारे में कई नई पहल की गई हैं जिसमें मनोरंजन के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करने का संदेश दिया गया है। इन प्रदर्शनियों में चित्र पुस्तकालय, चित्रमाला, रंगमंच, बागबानी, विज्ञान प्रयोगशाला, आदर्श घर और वस्तु परिचय जैसी व्यवस्थाएं शामिल थी।

यह प्रदर्शनियां छह वर्ष तक कि आयु के बच्चों का खेल के माध्यम से बौद्धिक और शारीरिक विकास कराती है। यहाँ प्रस्तुत लकड़ी, आटा, मिट्टी के बने खिलौने जहाँ बच्चों को शारीरिक हानि से बचाते हैं वहीं उनके समझने की कुशलता को भी बढ़ाते हैं। चित्र पुस्तकालय की पहल बच्चों की ज्ञानेन्द्रियों को विकसित करने में सहभागिता देती है साथ ही बाल्यावस्था में ही वस्तु परिचय करना भी सिखाती है। बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट की मदद से बचपन से ही रीसाइक्लिंग करना सिखाती इन प्रदर्शनियों में दीवाली, होली आदि त्योहारों के बचे हुए सामान से बनाई गई कई कलाकृतियां भी रखी गयी हैं। यहां बनाई गई विज्ञान प्रयोगशाला की मदद से शिक्षिकाएं बच्चों को अनाज, मसाले, मिट्टी, रंग, ध्वनि, स्पर्श, वायु आदि की पहचान करना सिखाएंगी। साथ ही प्रकृति के लिए बच्चों का प्रेम बढ़ाने उन्हें बागबानी भी सिखाई जाएगी, जिसकी सहायता से बच्चे पौधों और रंगों में अंतर करना भी सीख सकेंगे। आदर्श घर और हिन्दू मंदिर जैसी प्रदर्शनियां बच्चों को बुनियादी शिक्षा देंगी और उन्हें संस्कृति के प्रति जागरूक भी करेंगी।

इनका मुख्य उद्देश्य बस्ते का बोझ कम कर प्रैक्टिकल नॉलेज को बढ़ावा देना है। विद्यालय की शिक्षिकाएं बताती है की इन सभी कार्यों में सहभागिता करने बच्चों की माताएं भी विद्यालय आया करती हैं। नई शिक्षा नीति के उद्देश्य को पूरा करती यह प्रदर्शनियाँ रोचक ढंग से शिक्षा की शुरुआत करने की पहल करतीं हैं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने किया 'शिक्षा पथ प्रदीपिका' का विमोचन

21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्यमंत्री श्री शिव. राज सिंह चौहान ने विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा प्रकाशित 'शिक्षा पथ–प्रदीपिका' पुस्तक का विमोचन किया। इस अवसर पर स्कूल शिक्षा राज्यमंत्री श्री इंदर सिंह परमार, विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. कैलाशचंद्र शर्मा, जेएनयू नई दिल्ली के कुलपति प्रो. एम.जगदेश कुमार, प्रवेश एवं शुल्क विनियामक आयोग के अध्यक्ष प्रो. रवीन्द्र कान्हारे, आयोजन समिति के संयोजक डॉ. शशिरंजन अकेला, मंजूश्री देशपांडे सहित शिक्षाविद उपस्थित थे।

प्रकाशन– विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा **'21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प'** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में आंतरिक वितरण हेतु प्रकाशित।
सम्पादक मण्डल – डॉ. शशि रंजन अकेला, डॉ. रामदीन त्यागी, दीपक चौकसे, डॉ. अरुण खोबरे, तरुण सेन। **तकनीकी टीम –** मनोज पटेल, बापू वाघ, परेश उपाध्याय, प्रियंका सोनकर, रेवती रमण मिश्र, राकेश मिश्र, ललित विश्वकर्मा, डिंपल तिवारी, शिवांगिनी शर्मा। **मुद्रण –** कविता ऑफसेट प्रिंटर, भोपाल।